



## उत्सर्जन गैप रपॉर्ट 2022: UNEP

### प्रलिस के लयि:

उत्सर्जन गैप रपॉर्ट 2022, पेरसि समझौता, महामारी, GHG, COP-26, उत्सर्जन कम करने की पहल ।

### मेन्स के लयि:

उत्सर्जन गैप रपॉर्ट, UNEP ।

## चर्चा में क्यों?

COP27 से पहले [संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम \(UNEP\)](#) ने उत्सर्जन गैप रपॉर्ट 2022: द क्लोजिंग डि-क्लाइमेट क्राइसिस कॉल्स फॉर रैपडि ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ सोसाइटीज़' शीर्षक से एक रपॉर्ट जारी की है ।

- यह UNEP उत्सर्जन गैप रपॉर्ट का 13वाँ संस्करण है । इसके तहत वर्ष 2030 में अनुमानित उत्सर्जन और [पेरसि समझौते](#) के 1.5 डिग्री सेल्सियस और 2 डिग्री सेल्सियस लक्ष्यों के स्तरों के बीच के अंतर का आकलन किया जाता है । हर साल इस रपॉर्ट में अंतराल को कम करने की सफारसि की जाती है ।

## नषिकर्ष:

- **शीर्ष 7 उत्सर्जक** (चीन, EU27, भारत, इंडोनेशिया, ब्राज़ील, रूसी संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका) के साथ अंतरराष्ट्रीय परविहन की वर्ष 2020 में वैश्विक GHG उत्सर्जन में 55% भागीदारी रही ।
  - इन देशों में GHG उत्सर्जन वर्ष 2021 में फरि से बढ़ गया, जो कि [पूर्व-महामारी \(वर्ष 2019\)](#) के स्तर से अधिक है ।
- सामूहिक रूप से, [G20 सदस्य देश वैश्विक GHG \(ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन\)](#) उत्सर्जन के 75% के लयि ज़िम्मेदार हैं ।
- वर्ष 2020 में औसत प्रती वयक्त वैश्विक GHG उत्सर्जन **6.3 टन CO2 समतुल्य (tCO2e)** था ।
  - भारत वशिव औसत 2.4 tCO2e से काफी नीचे है ।
- वशिव वर्ष 2015 में अपनाए गए [पेरसि जलवायु समझौते](#) में नरिधारति लक्ष्यों से पीछे रहा है, जसिसे 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य तक पहुँचने का कोई वशिवसनीय मार्ग नहीं दखि रहा है ।
  - पेरसि समझौते ने पूर्व-औद्योगिक स्तर (अधमिनत: 1.5 डिग्री सेल्सियस) से ऊपर 2 डिग्री सेल्सियस की ग्लोबल वार्मगि सीमा को परभाषति किया, जसि पार करने पर अत्यधिक हीटवेब, सूखा, जल का अभाव आदि जैसी चरम मौसमी घटनाएँ हो सकती हैं ।
- [COP26 \(ग्लासगो, युके\)](#) के बाद से राष्ट्रीय प्रतजिजाएँ 2030 उत्सर्जन की भवषियवाणी करने के लयि एक नगण्य अंतर बनाती हैं ।

## सफारशें:

- वशिव को अगले आठ वर्षों में ग्रीनहाउस गैसों को अभूतपूर्व स्तर तक कम करने की आवश्यकता है ।
- वैश्विक इस्पात उत्पादन की कार्बन तीव्रता में वृद्धि को कम करने के लयि भारी उद्योग में वैकल्पिक प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता है ।
- वर्ष 2030 तक जीएचजी उत्सर्जन को सीमति करने के लयि भारी कटौती करने की तत्काल आवश्यकता है ।
  - बनिा शर्त और सशर्त [राष्ट्रीय स्तर पर नरिधारति योगदान \(NDC\)](#) से मौजूदा नीतियों की तुलना में वर्ष 2030 तक वैश्विक उत्सर्जन को क्रमशः 5% और 10% कम करने की उम्मीद है ।
  - ग्लोबल वार्मगि को 2 डिग्री सेल्सियस या 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमति करने के लयि सबसे अधिक लागत प्रभावी बनाकर इन प्रतशितों को 30% और 45% तक पहुँचाना चाहिये ।

## भारत में उत्सर्जन कम करने हेतु पहलें:

- [भारत स्टेज- IV \(BS-IV\)](#) से भारत स्टेज-VI (BS-VI) उत्सर्जन मानदंड ।

- [उजाला योजना](#) ।
- [अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन](#) ।
- [जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना \(एनएपीसीसी\)](#) ।
- [2025 तक भारत में इथेनॉल सममिश्रण](#) ।
- [भारत एनडीसी अपडेट](#) ।

## संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम:

### परिचय:

- यह 5 जून, 1972 को स्थापित एक प्रमुख वैश्विक पर्यावरण प्राधिकरण है ।
- यह वैश्विक पर्यावरण एजेंडा निर्धारित करता है, संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के भीतर सतत विकास को बढ़ावा देता है और वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के लिये एक आधिकारिक एजेंसी के रूप में कार्य करता है ।
- **मुख्यालय:** नैरोबी, केन्या ।
- **प्रमुख रिपोर्ट:** एमशिन गैप रिपोर्ट, एडेप्टेशन गैप रिपोर्ट, ग्लोबल एनवायरनमेंट आउटलुक, फ्रंटियर्स, इन्वेस्ट इन हेल्दी प्लैनेट ।
- **प्रमुख अभियान:** बीट पॉल्यूशन, UN75, विश्व पर्यावरण दविस, वाइल्ड फॉर लाइफ ।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न

**2022**

प्रश्न. UNEP द्वारा समर्थित 'कॉमन कार्बन मीटरिक' को किसके लिये विकसित किया गया है?

- दुनिया भर में निर्माण कार्यों के कार्बन फुटप्रिंट का आकलन
- दुनिया भर में वाणज्यिक फ्रैनिंग संस्थाओं को कार्बन उत्सर्जन व्यापार में प्रवेश करने में सक्षम बनाना
- सरकारों को अपने देशों के कारण समग्र कार्बन फुटप्रिंट का आकलन करने में सक्षम बनाना
- एक इकाई समय में दुनिया द्वारा जीवाश्म ईंधन के उपयोग के कारण होने वाले समग्र कार्बन फुटप्रिंट का आकलन करना

उत्तर: (a)

**2021**

प्रश्न. ग्लोबल वार्मिंग पर चर्चा कीजिये और वैश्विक जलवायु पर इसके प्रभावों का उल्लेख कीजिये । क्योटो प्रोटोकॉल, 1997 के आलोक में ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनने वाली ग्रीनहाउस गैसों के स्तर को कम करने हेतु नयित्रण उपायों की व्याख्या कीजिये । (2022)

**स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस**